आम के गीत रोटी की कहानी

प्रभात

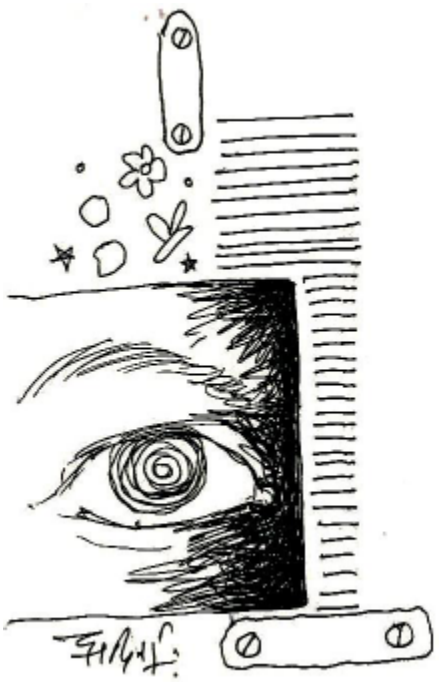

घरों से दोआबों तक फैले हुए
हमने उनके विशाल आंगन छीन लिए
छीन ली बुआओं की अंगुलियों की रोशनी
दीदियों की कलाइयों के उजास
उछाह भरी गोद चाचियों की, भाभियों की पीठ
बाबा-दादी के होठों पर बसे वन-गीत
पहाड़ों की कथाएं छीन लीं
छीनकर उनके शुरुआती बरसों की ये नावें
तटों की उनकी उत्सुकताएं छीन लीं

अब जब वे शिशु नहीं रहे हैं
कुछ बड़े हो गए हैं
उन्हें मतलब नहीं कि हमने उनसे क्या छीन लिया

हमें सुनाई देती है
उनकी बादलों के जैसी धमाचौकड़ी
हम विकल हो उठते हैं
सुनकर पेड़ों की डालें हिलातीं किलकारियां
हमारा मन विचलित होता है
पत्थरों में गिरते पड़ते झरनों सी
उजली हंसी को सुनकर हम घबरा जाते हैं
धीरे-धीरे जीवन के अंधियारों में बंद हुए हम
बाहर आकर देखते हैं
आखिर यह हो क्या रहा है
कब बंद होगा?

हम जितनी ऊंची कर सकते दीवारें कर चुके
जितना सुखा सकते थे नदियों को सुखा चुके
जितना घेर सकते थे खेल के मैदानों को घेर चुके
जितना रख सकते थे नींदों को सपनों के बगैर रख चुके

पृथ्वी कहां जाएगी इन पांवों की दौड़ से भागकर
कहां जाएगा अंतरिक्ष लम्बी छलांगों और ऊंची कूद से दूर
कैसे और कहां जाएगा छूटकर उनके हाथों से कोई देश
और अब तो उनके पास
अनुभवों की एक भरी-पूरी दुनिया है
आम के गीत और रोटी की कहानियां हैं। ◆